अंतरा-शब्दशक्ति

टैरस पर टंगी जिंदगानी

काव्य संग्रह

सुमन चौधरी ''सुमन''

टैरस पर टंगी जिंदगानी

(काव्य सँग्रह)

सुमन चौधरी "सुमन"

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-26-1

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © सुमन चौधरी "सुमन"

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Taires Par Tangi Jinagani' by 'Suman Choudhari Suman'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

मानव जीवन में सुख -दुख दोनों ही हैं ,,जिसका प्रभाव व्यक्ति के मन -मस्तिष्क पर पड़ना स्वभाविक है ,भावुक -कवि हृदय उन भावनाओं को शब्दों में पिरो देता है । मेरे विचार से हृदय में उमड़ते-घुमड़ते परिस्थितिजन्य उदगारों को जीते हुए उन्हें अभिव्यक्ति देना ,या कहें उन्हें शब्दों का ताना-बाना पहनाना ही कवि का कार्य है ,कविता है । हमारे आसपास कई बार ऐसी घटनाएं घटित हो जाती हैं ,जो हमें उद्वेलित करती हैं, प्रतिक्रिया स्वरुप लेखनी स्वत: ही अपना कार्य करने लगती हैं । मेरा मानना है कि कविताओं के माध्यम से स्वांत सुखाय के साथ-साथ, सामाजिक दायित्व का निर्वहन करना भी , कवि का दायित्व होता है।

अपनी पुस्तक "नेता टिकट और गिरगिट"(व्यंग्य संग्रह) एवं चाय-पानी जिंदाबाद (व्यंग्य संग्रह) के बाद अपने इस लघु काव्य संकलन" टैरेस पर टंगी जिंदगानी "के साथ एक बार पुनः अपने सभी स्नेही पाठकों से मुखातिब हूँ । हाँ , अंतराल कुछ लंबा हो गया है , जिसके कुछ कारण हैं ,किंतु इस बीच मेरी समाज सेवा एवं लेखन कार्य दोनों ही जारी रहे, विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्र -पत्रिकाओं में कविता ,कहानी एवं समसामयिक लेख, व्यंग्य ,यात्रा संस्मरण आदि प्रकाशित होते रहे , साथ ही आकाशवाणी पर भी निरंतर सक्रिय रही ।

प्रस्तुत काव्य संकलन "टैरस पर टंगी जिंदगानी" मे विविध विषयों पर आधारित मेरी कुछ कविताएं संग्रहित हैं , जैसे नारी सशक्तिकरण पर "क्या तुम नहीं जानती" , पर्यावरण पर" मैं गंगा बोल रही हूं..,मैट्रो सिटी का हाल ए दिल- टैरस पर टंगी जिंदगानी के माध्यम से बयान किया है , इसके अतिरिक्त "जिदंगी, "दस्तावेज "शायद बसंत आने वाला है" "बातें" "यादें" "कुछ क्षण तो जी लूँ" माँ ,, "फाग फाग हो उठा तन -मन" आदि कविताओं मे जीवन के कैनवास पर बिखरे विभिन्न रंग हैं । अपनी सभी रचनाओं के प्रथम पाठक एवं समीक्षक डॉ.अशोक चौधरी (जीवन साथी) एवं अपने बच्चों के सहयोग के लिए आभारी हूँ।

अंत में ,,अपने इस काव्य संग्रह "टैरस पर टंगी जिंदगानी "को अपने सुविज्ञ ,कवि- हृदय पाठकों के हाथ में सौंपते हुए, मैं अपार हर्ष एवं संतोष का अनुभव कर रही हूँ, इस आशा और विश्वास के साथ कि आप का स्नेह यूं ही मिलता रहेगा ।

सुमन चौधरी "सुमन"

अनुक्रमणिका

1. शायद बसंत आने वाला है	5
2. माँ	6
3. टैरस पर टंगी जिंदगानी	7
4. क्या, तुम नहीं जानती	8
5. बातें	9
6. टी प्वाइंट	10
7. यादें	11
8. कुछ क्षण तो जी लूँ	12
9. दस्तावेज	13
10.सोचो ! कि ऐसा होता, तो कैसा होता?	14
11.जिंदगी	15
12.फाग -फाग हो उठा तन-मन	16

शायद बसंत आने वाला है

दरख्तों से पत्ते झड़ने लगे हैं
नव किसलय प्रतीक्षातुर होने लगे हैं ,
कलियों ने ली अंगड़ाई ,
भँवरे भी गुनगुनाने लगे हैं ,
शायद बसंत आने वाला है ।
दूर कहीं कोई कोयल कूकी ,
सरसों भी खिलखिलाने लगी है ,
कुछ कही , कुछ अनकही सी बातें
याद आने लगी है ,
शायद बसंत आने वाला है ।
पर तू अब भी है, कुछ अनमना सा ,
कुछ खुद से, कुछ जमाने से खफा खफा सा ,
बहुत हो चुका !
अब अश्कों को यूं ना जाया कर ,
उठ ! नवसृजन कर ,
शब्दों से भावों का श्रंगार कर ,
रंगों से ख्वाबों को साकार कर ,
कि , अब बसंत आने वाला है ।

माँ

माँ! मुझको दुनिया में लेकर आई ,
मेरी खातिर रातों की नींद गंवाई ,
सूखे में मुझे सुला कर, खुद गीले में सोई ।
उंगली पकड़कर चलना सिखाया
अभी गुरु बनकर ,कभी सखी बनकर
मुझे तराशा- सवाँरा और समझाया
पग-पग पर हर मुश्किल को आसान बनाया "
संघर्षों से हार न मानो "का मूलमंत्र
माँ, तूने ही तो मुझे सिखाया ।
कड़ी धूप में साया बनकर छाई
ना कभी कोई गिला ना शिकवा
तेरे लबों पर सदा दुआ ही छाई
मैंने तो बस इतना ही जाना
माँ तेरे आंचल में मां मेरी दुनिया है समाई ।

. .

टैरस पर टंगी जिंदगानी

मैट्रो सिटी का फसाना ,
हर आदमी हो जैसे
एक दूजे के लिए बेगाना ,
कहने को हैं रौनकें ,
मॉल ,शॉपिंग सेंटर और जिमखाना ।
फिर भी कभी-कभी लगता है ,
जैसे दिल का कोई कोना हो वीराना ।
यहां कोई किसी को डिस्टर्ब नहीं करता ,
पड़ोसी भी पड़ोसी को अक्सर
हाय हेलो नहीं करता ।
एक आपाधापी में है ,
जैसे जीवन सबका कटता
गगनचुंबी हैं इमारते ,
जिनमें गुम होती वो कागज की कश्ती ,
वो दादी नानी की कहानी ।
बंद है कमरे ,बंद है खिड़कियां ,
सूरज चांद भी हुए जैसे बेमानी ,
ऐसे में टैरस ही बन जाती है संजीवनी ।
कभी-कभी सोचती हूं ,
यदि यह ना होती तो क्या होता ,
कैसे कटती फिर जिंदगानी ।
लगता है मेट्रो सिटी में ,
जैसे टेरेस पर हो जिंदगानी ।

क्या, तुम नहीं जानती

सुनो पांचाली !
तुम क्यों, कृष्ण का इंतजार कर रही हो ,
क्या तुम नहीं जानती ,
यह द्वापर पर नहीं कलियुग है ।
अब कृष्ण नहीं आएंगे ,
वैसे आज भी दरबार सजा है ,
और धर्मराज भी सिंहासन पर विराजमान हैं ,
पर ,क्या तुम नहीं जानती ,
युग बदला है ,चरित्र नहीं
तुम हो कि, अब भी
सत्य और धर्म की गुहार लगा रही हो ।
क्या तुम नहीं जानती ,
अब दुर्योधन और दु:शासन
महलों से बाहर भी,
चीर हरण करने लगे हैं ,
पर कोई कृष्ण आता !
अब ,तुम्हें स्वयं ही सबल होना होगा
क्यों ,किसी के इंतजार में आंसू बहा रही हो।

बातें

कुछ तेरी, कुछ मेरी,
कुछ इसकी, कुछ उसकी बातें,
कुछ कही, कुछ अनकही ,
ढेर सारी होती हैं बातें ।
कुछ मीठी ,कुछ कड़वी,
सड़कों सी लंबी बातें ।
कुछ मतलब की ,
कुछ बेमतलब की,
ढेर सारी बातें ही बातें ।
यादों में सिमटी, वादों में लिपटी,
प्यारी -प्यारी सी बातें ,
सिमट गई रात की चादर भी ,
पर खत्म नहीं होती ,ये बातें ।
बातों की दुनिया है ही , इतनी निराली
देखो !
मैंने भी बातों-बातों में कह डाली ,
कितनी बातें ।।

टी प्वाइंट

मैं और वह,
नदी के दो किनारे हैं ।
जो साथ-साथ तो चलते हैं
मगर मिल नहीं सकते ।
एक दूसरे को महसूस तो कर सकते हैं
मगर छू नहीं सकते ।
यूँ तो,
उसकी और मेरी
राहें अलग अलग हैं,
पर, सोचती हूँ,
काश!
क्या मालूम ,
किसी मोड़ पर ,
कोई टी प्वाइंट ही आ जाए
और कुछ लम्हे ही सही
हम दोनों
एक मुकाम पर रुक जाए।

यादें

यादें तो बस यादें ठहरी,
फिर चाहे हों, भूली -बिसरी ।
याद सुखों की पलकें गीली कर जाती,
और दुखों की ,
दिल को बोझिल कर जाती ।
यादों ने घेरा कुछ ऐसे ,
घिरा हो अभिमन्यु
चक्रव्यूह में जैसे ,
हाय ! क्या भूलूं ,
क्या याद करूं मैं ।
यादों की जकड़न से ,
खुद को कैसे मुक्त करू मैं ,
मत समझाओ !
नौका -मांझी ,दीया -बाती ,
संसार-सागर की बातें
जिंदगी के झंझावतों की निष्ठुर सी बातें ।
हाँ !
बदरी बन यदि छा जाते तुम ,
तपते मरुस्थल को महका जाते तुम,
तो सह जाती मैं ,
वह दहकती पीड़ा ,
खुद से खुद के सृजन की,
घनीभूत पीड़ा ,
यादें तो बस यादें ठहरी ।

कुछ क्षण तो जी लूँ

कभी-कभी मन करता है ,
कि, मैं फिर से बच्चा बन जाऊँ ,
ठुमक -ठुमक कर चलूँ ,
अपनी तुतलाती बोली से ,
सबकी आंखों का तारा बन जाऊँ ।
मां का आंचल थामू कभी,
कभी बाबा के काँधे चढ़ जाऊँ,
तितलियों के पीछे -पीछे दौड़ू ,
पंछियों की तरह उड़ जाऊँ ।
थक जाती हूँ !
कभी-कभी इस दुनियादारी से ,
काश !
थोड़ी सी नादानियाँ कर जाऊँ ।
कुछ क्षण तो जी लूँ ,
अल्हड-निश्छल जीवन ,
बड़प्पन की सारी बातें भूल जाऊँ ।
कभी-कभी मन करता है ,
कि, मैं फिर से बच्चा बन जाऊँ ।
.

दस्तावेज

मैंने !
मौत से पूछा ,
तू कौन है ?
उसने कहा ,
मैं कोई कविता नहीं ,
महज अल्फाज भी नहीं,
फिर ?
एक खामोशी ...
एक सन्नाटा
मैं एक दस्तावेज हूं ।
बिछड़ने का ,
आंसुओं का ,
सिसकियों का ।
मौत नाम है,
एक ऐसे तूफाँ का ,
जो सब कुछ ,
अपने साथ उड़ा ले गया ,
और पीछे छोड़ गया ,
कुछ अभिशप्त जीवन ।
जिनकी सांसे तो चल रही हैं ,
पर स्पंदन नहीं है ।
आंखे तो हैं पर सपने नहीं हैं ।
जो जिंदा तो हैं ,
पर जीवन नहीं है।

सोचो ! कि ऐसा होता, तो कैसा होता?

बादलों को ओढ़ लेते ,
और तारों का होता बिछौना अपना ,
जो कहीं आसमां में होता,
घर एक अपना ।
चंदा मामा से सुनते फिर कहानियां ,
और चांदनी की गोद में सो जाते ,
सुबह- सवेरे, ऊषा की किरणों से जगते ,
और सूरज चाचू के संग काम पर जाते ।
होती जब रात तो ,
माँ के आंचल में दुबक जाते ,
पंछियों की तरह उड़ते -फिरते ,
और हवाओं की तरह गाते -गुनगुनाते ।
रातें भी होती अपनी ,
और दिन भी होता अपना,
खुशियों से भरा रहता
फिर दामन अपना।
सोचो !
कि ऐसा होता ,
तो कैसा होता ?
जो कहीं आसमां में होता ,
घर एक अपना ।

जिंदगी

जिंदगी , रेशम का रुमाल नहीं ,
ये किसी शायर का कलाम नहीं ,
जिंदगी कोई ख्वाब भी नहीं ,
यह सिर्फ तेरा- मेरा सवाल नहीं ,
जिंदगी किसी के लिए रोटी
तो किसी के लिए रूमानी है ।
किसी के लिए मीठा होता ,
तो किसी के लिए
खारा पानी है ।
जिंदगी तो जिंदगी है ।
एक बहता दरिया है ,
जिसमें रेत भी है ,
और मोती भी हैं ,
ठहराव भी है ,
और रवानी भी है ।
जिंदगी कुछ और नहीं
कुछ पन्नों की कहानी है
यह तो बस आने और जानी है ।

फाग -फाग हो उठा तन-मन

सरसों बौराई ,
अमुआ बौराए,
बौराए से अली घूमत हैं.
मनवा रहा है डोल ।
डाली-डाली टेसू फूले ,
कोयल गाती मीठे बोल ।
बाजत है , ढोल मृदंग
गूजें है, हंसी-ठट्ठा और किल्लोल ।
महक उठे हैं रंग सारे ,
छाया है, चहूँ और गुलाल ,
कुछ ऐसा चढ़ा भांग का रगं ,
हिय में उठत हिलोल ।
मारी भर पिचकारी, कान्हा ने,
हो गई ब्रजकिशोरी लाल ।
इत-उत डोल रही,
सूझत ना कोई जतन ,
रसिया संग होली खेलत ,
मचावत है खूब धमाल ।
फाग-फाग हो उठा , तन-मन
ऐसी होली खेलत हैं, नंदलाल ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - सुमन चौधरी, सुमन

जन्मतिथि - 3 जुलाई

शिक्षा - पी.जी. डिप्लोमा इन मास कम्युनिकेशन, एम.ए.

संप्रति - स्वतंत्र लेखन एवं सामाजिक कार्यकर्ता विधाएँ- कहानी, कविता, व्यंग्य, यात्रा संस्मरण आदि। विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में रचनाओ का नियमित प्रकाशन, आल इंडिया रेडियो, आकाशवाणी से कहानी, कविताओ और वार्ताओं का नियमित प्रसारण।

पद - उप संपादिका- कल्याणी पत्रिका, रिपोटर मेल पत्रिका,
पूर्व जिला प्रभारी- ग्लोबल इंडिया पत्रिका, मुरादाबाद
संपादिका - विदूर भूमि, बिजनौर

प्रकाशित पुस्तक - नेता टिकट और गिरगिट (व्यंग्य संग्रह)
चाय-पानी जिंदाबाद (व्यंग्य संग्रह)
काव्य संग्रह एवं कहानी संग्रह (प्रकाशनाधीन)

सम्मान - साहित्य एवं समाज सेवार्थ जिला प्रशासन बिजनौर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, मार्च 2018।
महिला साहित्य सृजन सम्मान 2018।
महिला शिक्षा सुरक्षा सम्मान 2015 उ.प्र. सरकार।
साहित्यिक सम्मान- नाट्य दीप सांस्कृतिक संस्था बिजनौर 2015 ।
श्रमजीवी पत्रकार यूनियन - उ.प्र. साहित्यिक सेवाएं 2014 ।
परिवार परामर्श केन्द्र में सराहनीय कार्य हेतु पुलिस अधीक्षक बिजनौर 2016
साहित्य एवं समाज सेवा महिला सशक्तिकरण अवार्ड - अखिल भारतीय राजीव गांधी मंच 2011, समाज सेवार्थ - हिमालयन इंस्टिट्यूट जोली ग्रांट देहरादून 2009, अंतर्राष्ट्रीयरोटरी अवार्ड - बाल मृत्यु दर की रोकथाम कार्य हेतु

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-26-1

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com